International Journal of Applied Research 2020; 6(3): 241-242

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(3): 241-242
www.allresearchjournal.com
Received: 15-01-2020
Accepted: 19-02-2020

डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य चित्रकला,
राजकीय महाविद्यालय, बून्दी,
राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य चित्रकला,
राजकीय महाविद्यालय, बून्दी,
राजस्थान, भारत

राजस्थानी लघु चित्र–परम्परा में चित्र संयोजन

डॉ. अरविन्द मैन्दोला

सारांश
राजस्थानी लघुचित्र शैली के परम्परागत संयोजन के कला तत्व एवं तकनीकी अंकन पद्धतियों की नवीन विधाऐ तथा रूपों का अभिप्राय अपना विशेष महत्व रखते हैं। राजस्थानी लघुचित्रों में शास्त्रीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ हैं। इन चित्रों की महत्वपूर्ण विशेषताऐ दर्शक के मनोभावों के अनुरूप सौन्दर्यात्मक अनुभूति देने तक पूर्ण सक्षम रहे हैं। चित्र संयोजन में सहयोग, सामंजस्य, संतुलन प्रभाविता, प्रमाण एवं आकर्षण के सिद्धान्त महत्वपूर्ण माने गये हैं। यहाँ के लघु–चित्र उपरोक्त सभी गणों से युक्त माने गये हैं। आवृत्ति द्वारा लयात्मकता लघुचित्रों की निजी विशेषता हैं। अजन्ता शैली की तरह लम्बी रेखाओं द्वारा अंकन प्रवाह और लयात्मकता का भाव प्रदर्शित करती है जिन्हें हम यहाँ के लघुचित्रों में देख सकते हैं।

कूटशब्दः चित्र संयोजन, प्रतिपादन, सौन्दर्यात्मकता, अन्तराल, सामंजस्य, विशिष्टताओं, स्वर्णित, नियोजित, अनुकूल, सौम्यता, कार्यकुशलता, शाश्वत, मनोभाव, अभिव्यक्ति, उद्दीपन, प्रभावमण्डल, शिल्पशास्त्र

प्रस्तावना
राजस्थानी लघुचित्र शैली के परम्परागत चित्र संयोजन के कला तत्व रेखा, रूप, रंग एवं प्रतीकों के तकनीकी अंकन पद्धतियों की नवीन विधाएं तथा रूपों के नवीन अभिप्राय अपना विशेष महत्व रखते हैं। भारतीय कला में सभी शास्त्रीय सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है। इसमें गतिपूर्ण संयोजन, वक्राकार रेखाएं मानवीय आकारों के अलग–अलग स्वरूप तथा चित्रण इकाइयों को विभिन्न रूपों, अभिप्रायों एवं प्रतीकों को कुशलतापूर्वक संयोजित करते हुए अंकित करना मूल ध्येय रहा हैं। इस कला में प्रत्येक अभिप्राय एंव प्रतीकों के रूप में चित्रण की कार्य कुशलता दिखाई देती है। इन चित्रों की महत्वपूर्ण विशेषताएं दर्शक के मनोभावों के अनुरूप सौंदर्यात्मक अनुभूति देने तक में ये लघुचित्र पूर्ण सक्षम रहे हैं।
राजस्थानी लघुचित्रों में विषयवस्तु के अनुरूप अन्तराल आकृति की जमावट, रूप एवं रंग की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति आदि में एक विशाल दृष्टिकोण होता हैं। चित्रभुमि का विभाजन सैद्धांतिक आधार लिए हुए हैं जिनमें कहीं समविभक्त विभाजन से अन्तराल को विभाजन कर आलंकारिक संयोजन दिखाया हैं तो कही असमविभक्त विभाजन हैं। संयोजन में ये मौलिक विशेषताएं सर्वत्र दृष्टिगोचर होती हैं।

संयोजन–सिद्धांत और राजस्थानी लघुचित्र शैलीः चित्र संयोजन में सहयोग, सामंजस्य, संतुलन, प्रभाविता, प्रवाह, प्रमाण आदि संतुलन एवं आकर्षण के सिद्धांत कला निर्माण में महत्वपूर्ण माने गये हैं। राजस्थानी लघु चित्रकला इन सभी गुणों से युक्त हैं। काव्य को आधार बनाकर चित्रण करने की प्राचीन परम्परा राजस्थान में विशिष्ट रही हैं, कुमार स्वामी का तो कथन है कि राजपुत चित्रकला तो भारतीय साहित्य की प्रतीक हैं। राजस्थानी लघुचित्र निर्माण में अनेक कलाकारों का सम्मलित सहयोग होता था। हिन्दू–मुसलमान कलाकार मिलजुल कर कला की विशिष्टताओं को उजागर करते थे। ऐसे अनेक उदाहरण उदयपुर, जयपुर, बून्दी, बीकानेर, अलवर लघुचित्र शैली में उपलब्ध हैं।

सामंजस्यः इसे सम्बद्धता का सिद्धांत भी कहा जाता हैं जिससे भावों की एकात्मकता प्रमाणों के अनुरूप हो सकें। इसमें स्वर्णिम विभाजन, नियोजित भूमि विभाजन, सरलीकृत आकारों का विषय वस्तु से सम्बन्ध विवके युक्त रंग संयोजन आदि से मानव मस्तिष्क एवं कलाकृति के मध्य तादात्मय उत्पन्न होता हैं। इसी तरह रंगों का सामंजस्य चित्रकार की कार्यकुशलता का भी द्योतक हैं। किन्तु रूप सांमजस्य भावों के अनुकूल गौणता और प्रमुखता के आधार पर किया जाता हैं। इससे दृष्टि सौम्यता के साथ–साथ चित्र फलक में शान्त शाश्वत भाव दृष्टि गोचर हो जाते हैं। गीत गोविन्द के चित्रों में राधा के विरह, कृष्ण की बाल–क्रीड़ओं आदि चित्रों में चित्रकार ने वैचारिक एक सूत्रता

बांधी हैं।
जीवन के सभी रसों की अभिव्यक्ति इस लघुचित्र शैली में बिना रस एवं छंद के इतनी सरल स्वाभाविक भावों की अभिव्यक्ति सम्भव नहीं हो सकती। स्पर्श, रस, रूप, दुःख–आनन्द, अर्चना–भक्ति, अनुराग–वैराग्य, वात्सल्य एवं श्रृंगारिक मनोभावों को दर्शाया गया हैं। 1650 ई लगभग के चित्रसम्पुट कविप्रिया, रसिकप्रिया तथा गीत गोविन्द आदि के कई प्राचीन चित्रों में देख सकते हैं।

सहयोगः चित्र–संयोजन में सहयोग तत्व सम्पूर्ण चित्र को एकसूत्र में पिरोये रखता हैं। चित्र में अनेक आकृतियों का भाव अभिव्यक्ति में एकीकृत हो जाने पर ही श्रेष्ठ चित्र का निर्माण संभव हैं।
राजस्थानी लघु चित्रकला में आलंबन, अनुभाव तथा उद्दीपन का चित्रण बहुलता से हुआ हैं, अतः आलंबन को केन्द्र मानकर सम्पूर्ण चित्र का संयोजन सामंजस्यपूर्ण हुआ हैं। संतुलन व अनुपात का सिद्धांत चित्र फलक में दिखाई देता हैं। जिसके बढ़ाने व घटाने पर वस्तु के प्रमुख एवं गौण तत्वों को व्यक्त करने में सहायता मिलती हैं।

संतुलन एवं प्रभाविताः राजस्थानी लघुचित्रों में संतुलन एवं प्रभाविता का विशेष ध्यान रखा गया हैं। नायक–नायिका को केन्द्र में रखकर अधिक प्रभावशाली बनाया है। अधिंकाशतः चित्रों में नायक या नायिका के सिर के पीछे प्रभामण्डल बनाकर और अधिक चमत्कापूर्ण महत्वशाली बना दिया हैं। राजस्थानी चित्रकला के लघुचित्रों में दृष्टिगोचर का संतुलन, चित्र फलक पर दौड़ती हुई रेखाएं, लयात्मक आकृतियां, रंग, प्रकृति–परिवेश का विषयानुकूल अंकन, पशु–पक्षियों एवं विश्रांति की मुद्राये आदि इस प्रकार अंकित की जाती हैं जिससे प्रमुख विषय की प्रभाविष्णुता अधिक संतुलित होकर प्रभावशाली बन गयी हैं।

लय तथा प्रमाणः भारतीय शिल्पशास्त्रों के सिद्धांतों में चित्र की संरचना में प्रमाण का संतुलन सौन्दर्य–बोध को उभारता हैं। इसलिए प्रमाण यांत्रिक न होकर सौन्दर्य बोधात्मक होना अनिवार्य हैं। प्रकृति में तुलनात्मक आनुपातिक संबंध है। भारतीय लघु चित्रकला में इस शास्त्रीय संबंध पर विशेष ध्यान दिया गया है। किन्तु फिर भी अनेक शैलियों में प्रमाण की भिन्नता देखने को मिलती हैं। लघुचित्रों में नायिकाओं के अंकन में कल्पनात्मक अतिश्योक्ति बरती गयी हैं।

चित्रमय–तत्वों का प्रयोगः राजस्थानी लघुचित्रकारों ने चित्रों में ओज, माधुर्य आदि गुणों की अभिव्यक्ति के लिए रेखाओं का गोलाकृत उतार–चढ़ाव तथा वर्णो के छाया–प्रकाश, घनत्व, सरलता–विरलता आदि कौशल का भरपूर प्रयोग किया हैं। लघुचित्रों में लहरदार रेखाएं गति का आनन्द प्रदान करती है इस गति में रूप, वर्ण, तान, पोत, आदि सभी चित्रमय तत्व मिलकर जिस रूप का निर्माण करते हैं वे भारतीय कला की अमर धरोहर हैं। बून्दी शैली के श्रृंगारी चित्रों तथा नाथद्वारा शैली में गाय–बछड़ों के चित्रण में रंग और रेखाओं की लयात्मक छवि देखते ही बनती है। आवृत्ति द्वारा लयात्मकता लघुचित्रों की निजी विशेषता हैं। अजन्ता शैली की तरह घुमावदार लम्बी रेखाओं द्वारा अंकन प्रवाह और लयात्मकता का भाव प्रदर्शित करती है जिन्हें हम यहां के लघुचित्रों में देख सकते है। ।

सन्दर्भ

1. जी.एन शर्मा :– ऐतिहासिक निबन्ध राजस्थान, पृ. 22
2. जयसिंह नीरज :– राजस्थानी चित्रकला, पृ. 31
3. वाचस्पति गैरोला :– भारतीय चित्रकला, इलाहाबाद पृ.–161
4. रघुवीर सिंह :– पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ. 130
5. गोवर्धन लाल जोशी :– नाथाद्वारा की चित्रकला, पृ. 35–37
6. कुंवर संग्राम सिंह :– अजमेर पेन्टिग, आकृति रजत अंक, पृ. 15